नमाज़

आयतुल्लाहिलउज़मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
सम्पादनः नूरे हिदायत फ़ाउन्डेशन, अनुवादकः बाक़र रज़ा ख़ाँ (ख़ाज़िन इमामिया मिशन)

मज़हबे इस्लाम के जो हुक्म है उनमें सबसे ज़्यादा खुसूसियत "नमाज़" ही है यूँ तो इस्लाम का मक़सद यह है कि बन्दा अपने ख़ालिक़ को (पैदा करने वाले) किसी वक़्त भी न भूले। यही हर वक़्त अल्लाह को याद करना ही फ़र्ज़ का एहसास पैदा करता है या याद दिलाता है मगर इस याद के निशानी के तौर पर जो ख़ास इबादत क़ानूने इस्लाम मे वाजिब की गई उस का नाम नमाज़ है।

नमाज़ के वक़्त (समय)

नमाज़ के समयों को चौबीस घण्टों में इस तरह बांटा गया है कि इन्सान अपने जीवन की आवश्यकताओं को भी पूरा करता रहे और ज़रूरतों की लगन में अल्लाह को भी न भुलाए ओर इसी तरह पूरा जीवन इस ध्यान के साथ गुज़ारे कि वह एक बड़ी शक्ति की देख रेख में है जो कि ज़रा भी गुमराही पसन्द नहीं करता। यही ध्यान अगर मज़बूती के साथ हर वक़्त क़ायम रहे तो इन्सान को गुनाह से रोकता है जैसा कि कुर्रआन में लिखा है।

"इन्नस्सलाता तन्हा अनिल फ़हशाए वल मुन्कर" नमाज़ हर गुनाह और बुराई से रोकने वाली चीज़ है।
पाँच वक़्तों की नमाज़

इन्हीं समयों के अनुसार रात और दिन में पाँच नमाज़ें तय की गयी हैं:

१. **सुबहः** इसका समय सुबह की सफ़ेदी ज़ाहिर होने के बाद सूरज निकलने तक। इस नमाज़ को पाबन्दी से पढ़ने से आराम पसन्दी ख़त्म होती है और दिन का कोई हिस्स बेकार नहीं जाता।
२. **ज़ोहरः** दोपहर को जब दिन ढलने लगता है उस समय से इसका वक़्त शुरू होता है।
३. **अस्रः** जुहर की नमाज़ के बाद अस्र का समय है, मग़रिब तक रहता है।
४. **मग़रिबः** सूरज डूबने के बाद जब पूरब की तरफ रात की स्याही फैल जाये।
५. **इशाः** मग़रिब के बाद से आधी रात तक।

रकात

जब से नमाज़ में खड़े हुए और जो कुछ पढ़ना है वह पढ़ा, उस समय से रुकू (घुटनों पर हाथ रखकर झुकना) और दो सिजदे करने तक को धर्म की भाषा में 'रकात' कहा जाता है।

वाजिब नमाज़ों मे सिर्फ़ पहली यानी सुबह की नमाज़ दो 'रकात' मग़रिब की तीन 'रकात' बाक़ी सब यानी जुहर, अस्र और इशा चार-चार 'रकात' है।

जिस नमाज़ में जितनी रकातें हैं, उतनी ही तादाद में रुकू होते हैं और इसकी दोगुनी संख्या में सिजदे (सर झुकाना) होते हैं।

तहारत (पवित्रता)

नमाज़ की हालत मे आदमी का बदन और कपड़े पाक (पवित्र) होना चाहिए। इसमें किसी प्रकार की नजासत (अपवित्रता) नहीं होना चाहिए और फिर इसके बाद नमाज़ के पहले वज़ू और विशेष (कुछ) हालतों मे गुस्ल (नहाना) और इन दोनों के करने मे मजबूरी की हालत मे तयम्मुम करना होता है।

वजु क्या है? अल्लाह की मर्ज़ी की नीयत (ध्यान) से मुंह और दोनों हाथों की कोहनियों से उंगलियों की नोकों तक पानी से धोना और सर के आगे के हिस्से पर और पैरों पर गट्टों तक भीगे हाथ का फेरना।

गुस्ल (नहाना)

अल्लाह की मर्ज़ी की नीयत से इस तरह नहाना कि पहले सर और गरदन को धोए फिर बदन का दाहिना हिस्सा और फिर बायाँ हिस्सा या नीयत के साथ एक ही बार में किसी नहर इत्यादि में ग़ोता लगा लेना गुस्ल कहलाता है। और तयम्मुम वज़ू और गुस्ल न कर सकने पर वाजिब होता है। नीयत के साथ मिट्टी से पेशानी (माथा) की ओर हाथों की पुश्त (हथेली के पीछे) पर हाथ फेरना।

क़िब्ला

नमाज़ के समय हर मुसलमान को वह जहाँ भी है काबे की ओर मुंह करना ज़रूरी है। यह इस्लामी

संगठन का एक शक्तिशाली चिन्ह है, इसी को क़िब्ला कहते हैं।

लिबास (वस्त्र)

मर्द के लिये बिल्कुल नंगे बदन से और औरत के लिए चेहरा (मुंह) और दोनों हाथों के अलावा सारे बदन को छिपाये बग़ैर नमाज़ सही नहीं है। अकेले या अंधेरे इत्यादि में भी नमाज़ के लिए इतना पहनना आवश्यक है।

अज़ान

नमाज़ के लिए लोगों को ख़बर देने के लिए अज़ान का हुक्म है। इसकी तरकीब यह है कि ऊँची आवाज़ से चार बार "अल्लाहो अकबर" (अल्लाह सबसे बड़ा है), दो बार "अशहदो अन-ला इलाहा इल्लल्लाह" (मैं इक़रार/स्वीकार करता हूँ कि अल्लाह के अलावा कोई सच्चा माबूद/ईश्वर नहीं।), दो बार "अशहदो अन्ना मुहम्मदर रसूलुल्लाह" (मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद स० अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हैं।) इसके बाद दो बार ईमान का जुज़ (हिस्सा) होने की वजह से कहा जाता है "अशहदो अन्ना अमीरुल मोमिनीना अलीय्यन वलीउल्लाहे वसीयो रसूलिल्लाहे व ख़लीफ़तहू बिला फ़स्ल" (मैं इक़रार/स्वीकार करता हूँ की हज़रत अमीरिल मोमिनीन अली इब्ने अबी तालिब स० अल्लाह के वली/ दोस्त और ख़ुदा के रसूल के वसी/सहायक और बिला वास्ता जानशीन/उत्तराधिकारी हैं।), दो बार "हय्या अलस्सला" (नमाज़ के लिए तैयार हो), दो बार "हय्या अललफ़लाह" (दीन/धर्म और दुनिया की भलाई हासिल करने चल पड़ो), दो बार "हय्या अला ख़ैरिल अमल" (सबसे बड़े नेक अमल/कर्म के लिए आगे बढ़ो), दो बार "अल्लाहो अकबर" (अल्लाह सबसे बड़ा है।) और दो बार "ला इलाहा इल्लल्लाह" (कोई सच्चा ख़ुदा नहीं है सिवा अल्लाह के।)

नक़्क़ारा, भोंपू और सीटी वग़ैरा जितने तरीक़े दुनिया में ईजाद हैं, उन सबसे इस एलान के तरीक़े को बरतरी हासिल है। इसमें एक आवाज़ ही नहीं बल्कि पूरा संदेश है जो इस्लाम धर्म का विशेष लक्ष्य है।

अक़ामत

नमाज़ में खड़े होने के समय जमात (पंक्ति) में नमाज़ियों को नमाज़ के लिए बुलाने का या स्वयं अकेले अपने ध्यान को पूरी तरह लगाने के लिए अक़ामत का हुक्म है। इसके अधिकतर शब्द अज़ान से मिलते हुए हैं। शुरू में अल्लाहो अकबर चार बार के बजाये दो बार है और हय्या अला ख़ैरिल अमल के बाद दो बार क़दक़ा मतिस्सलाह (नमाज़ शुरू हो गई) है, और आख़िर में लाइलाहा इल्लल्लाह दो के बजाये एक बार है।

नीयत (इरादा)

दूसरे अन्य धर्मों में इबादत ज्ञान और ध्यान से सम्बन्ध रखती है। इस्लाम चूँकि रूह/आत्मा के साथ जिस्म/शरीर को भी इबादत में शामिल रखता है इसलिए यहाँ शरीर के कुछ अंगो को भी काम करना पड़ता है। मगर इनमें नीयत अर्थात इस काम की सब विशेषताओं के साथ अल्लाह की मर्ज़ी की ख़ातिर करना ज़रूरी है इस तरह इसमें शरीर के अंगो के साथ दिल और दिमाग़ भी अनिवार्य तौर पर शामिल हो जाते हैं। इबादत बिना नीयत के सही नहीं हो सकती।

तकबीरतुल अहराम

क़िब्ले (काबे) की ओर सीधे खड़े होकर नीयत के साथ दोनों हाथ उठा कर कानों तक ले जायें और इस इरादे से कि इन शब्दों के साथ नमाज़ शुरू हो रही है कहेः "अल्लाहो अकबर" (अल्लाह सबसे बड़ा है) यह नमाज़ का पहला रुक्न (अंग) है। इसके जानबूझ कर या न जानने की वजह से न कहने पर नमाज़ बरबाद हो जाती है।

क़िरात (पढ़ना)

इसके बाद अलहम्द का सूरा पढ़ेंः

बिस्मिल्लाहिर्रमार्निरहीम

"अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन अर्रहमानिर रहीम मालिक यौमिद्दीन इय्याका नाबुदो व इय्याका नस्तईन एह दिनस्सिरातल मुस्तक़ीमा सिरातल लज़ीना अन अम्ता अलैहिम ग़ैरिल मग़ज़ूबे अलैहिम वलज़्ज़ालीन"

अर्थात मदद से अल्लाह की जो बड़ी रहमत वाला, बहुत रहम(दया) करने वाला है। हर तरह की तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो सब दुनियाओं का पालने वाला (परवरदीगार) है। वह जो बड़ी रहमत वाला है। वह जो हिसाब किताब के दिन का मालिक है। (इसे एक सिपास समझना चाहिए जिसे बन्दा अपने मालिक के दरबार में आने के बाद पेश कर रहा है) तेरी ही इबादत

करते हैं और तुझ ही से मदद मांगते हैं। हमें सीधे रास्ते पर चला उनका रास्ता जिन पर तूने रहमत की, उनका नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब (प्रकोप) नाज़िल हुआ और न उनका जो रास्ते से भटके हुए हैं।

(अर्थ को दिमाग़ में रखें, नमाज़ में तरजुमे का पढ़ना ठीक नहीं है।)

सूरे अलहम्द के बाद कोई दूसरा सूरा पढ़ना चाहिए। बस वह चार सूरे न पढ़े जिनमें सिजदा वाजिब है और बेहतर यह है कि सूरे फ़लक़, सूरे नास, अलमनश्रा, वज़्ज़ोहा, लायात और सूरे फ़ील भी न पढ़ें।

अधिकतर इस रकात में सूरे इन्ना अन्ज़लना पढ़ा जाता है जो नीचे लिखी है।

बिस्मिल्लाहिर्रमार्निरहीम

इन्ना अन्ज़लनाहो फ़ी लैलतिल क़द्र व मा अदराका मालैलतुल क़द्र लैलतुल क़द्रे ख़ैरुन मिनअलफ़िशहर तनज़्ज़लुल मलायकतो वर रुहो फ़ीहा व इज़्ने रब्बेहिम मिन कुल्ले अम्र सलामुन हिया हत्ता मत ल इल फ़ज्र। अर्थः मदद से अल्लाह की जो बड़ी रहमत वाला बहुत रहम करने वाला है। हमने उसे क़द्र की रात मे उतारा तुम्हें क्या ख़बर कि क़द्र की रात क्या चीज़ है। क़द्र की रात हज़ार महीने से बढ़ कर है फ़रिश्ते और रुहुल कुद्स इस में अपन पालने वाले के हुक्म से उतरते हैं वह हर बात से सलामती का ज़रिया है सुबहा होने तक।

रुकू

सूरे हम्द और दूसरे सूरे के पढ़ने के बाद तकबीर यानी अल्लाहो अकबर कहे फिर रुकू यानी इतना झुक जाये कि दोनों हाथो की हथेलियाँ घुटनों के ऊपर पंहुच जायें फिर तीन बार सुब्हानअल्लाह (हर बुराई से दूर है अल्लाह) या एक बार सुब्हाना रब्बिल अज़ीमे व बेहमदे (हर बुराई से दूर है मेरा पालने वाला जो बड़ी अज़मत वाला है और उसी के लिये हर तारीफ़ है।) कहे। अच्छा यह है कि सुब्हाना रब्बिल अज़ीमे व बेहमदे को कम से कम तीन बार कहे।

रुकू के बाद फिर खड़ा होना

रुकू के बाद सीधा खड़ा हो और (सुन्नत) यह है कि इसी हालत में कहे समे अल्लाहो ले मन हमेदा (अल्लाह सुनता है उसकी जो उसकी तारीफ़ करे।) यह उस ख़्याल का दोहराना है कि नमाज़ में बन्दा अपने पैदा करने वाले के दरबार में हाज़िर है यह उसे नहीं देखता न सही वह तो इसे देख रहा है और उसकी बातों को सुन रहा है। यही ख़्याल जितना ज़्यादा हो उतना ही नमाज़ में ध्यान रहता है इसके बाद झुके और माथा ज़मीन पर रखे इस तरह कि माथे के अलाा दोनों हाथों के नीचे और दोनों घुटनों और दोनों पैरों के अंगूठे भी ज़मीन पर टिके हुए हों।

माथे के नीचे ज़मीन का कोई हिस्सा हो या ऐसी चीज़ जो ज़मीन से उगती है जैस लकड़ी या पत्ता मगर शर्त यह है कि वह पहनने और खाने की चीज़ न हो।

सिजदे की हालत मे रुकू की तरह दो या तीन बार सुब्हान अल्लाहे कहे या एक बार सुब्हाना रब्बिल आला व बेहम्दे।

पहले सज्दे के बाद सिर उठा कर सीधा बैठे अल्लाहो अकबर कहे और अस्तग़फिरुल्लाहा रब्बी अतूबो इलैहे (मैं क्षमा चाहता हूँ अपने अल्लाह से और उसके दरबार में तौबा करता हूँ)।

इसके बाद अल्लाहो अकबर कह कर पहले सज्दे की तरह दूसरा सज्दा करे और इसके बाद सर उठाये। यहाँ पर पहली रकात समाप्त हो जाती है

दूसरी रकात और उसका पढ़ना

अब दूसरी रकात के लिए बे हौलिल्लाहे व कूव्वते ही अकूमों अक़ऊद कहे (अर्थात अल्लाह ही की दी हुई शक्ति से खड़ा होता और बैठता हूँ) फिर सीधा खड़ा हो और पहली रकात की तरह सूरह हम्द आर कोई दूसरा सूरह उन्हीं शर्तो के साथ जिनका बयान पहले हो चुका है पढ़े। बेहतर यह है कि सूरह कुल हो वल्लाह पढ़े जो नीच दिया है। यह सूरह कुरआन के सूरों में सबस बढ़कर है।

बिस्मिल्लाहिर्रमार्निरहीम

कुलहो वल्लाहो अहद अल्लाहुस्समद लम यलिद वलम यूलद वलम यकुन्लहू कुफ़वन अहद। (अर्थात तुम्हारा क़ौल होना चाहिए कि वह अल्लाह अकेला है अल्लाह सबका मालिक, आवश्यकताओं को पूरा करने वाला है उसके कोई संतान नही है न वह किसी दूसरे की

संतान है न कोई दूसरा उसके बराबर है।)

ज़हेर व इख़फ़ात

सुबह, मग़रिब और इशा की नमाज़ में सूरा आवाज़ से पढ़े जिसको 'ज़हेर' कहते हैं और ज़ोहर व अस्र मे चुपके चुपके जिसका 'इख़फ़ात' कहते हैं यह सिर्फ़ मर्दो क लिए है लेकिन औरतों का सब नमाज़ो को इख़फ़ात के साथ पढ़ना चाहिए।

कुनूत

दूसरी रकात में सूरों के बाद अल्लाहो अकबर कह कर दोनों हाथ अपन चेहरे के सामने रखकर इस तरह कि हथेलियाँ आसमान की तरफ़ हों और कुनूत पढ़े जिसका मतलब है अल्लाह के दरबार में इलतिजा (प्रार्थना) पेश करना। इसके लिए कोई विशेष शब्द नहीं हैं। एक कुनूत के शब्द नीचे दिये जा रहे हैं।

अल्लाहुम्मग़ फ़िरलना वर हमना व आफ़ेना वाफ़ोअन्ना फ़िद्दुनिया वल आख़ेरा इन्नका अला कुल्ले शैईन क़दीर।

अर्थात ऐ अल्लाह हमको क्षमा कर दे हम पर अपनी कृपा कर हमें सलामती दे और हमें माफ़ कर दुनिया और आख़िरत दोनो में यक़ीनन तू हर बात पर क़ाबू रखता है।

यह कुनू इस्लाम की उस शिक्षा को उजागर करता है कि न दीन को भूलें न दुनिया को, दोनों की कामयाबी चाहें।

इसके बाद फिर रुकू करे और सर उठा कर उसी तरह कहे समे अल्लाहो लेमन हमेदा और फिर दोनों सज्दे उसी तरह करे।

तशहूद

दूसरी रकात के सज्दों के बाद सर उठा कर बैठे और अल्लाहो अकबर कहने के बाद तशहूद पढ़े-

"अशहदो अन ला इलाह इल्लल्लाहो वैदहू ला शरीकलह व अशहदो अन्ना मोहम्मदन अब्दहू व रसूलहू अल्ला हुम्मा सल्ले अला मोहम्मदिन व आले मोहम्मद" (अर्थात मैं स्वीकार करता हूँ की मोहम्मद स० उसके बन्दे विशेष और उसके पैग़म्बर/दूत हैं। ऐ अल्लाह दुरूद भेज मोहम्मद व उनके परिवार पर)

सलाम

अगर दो रकात वाली नमाज़ हो जैसे सुब्ह की तो इसी तशहूद के बाद सलाम फेरे जिसके शब्द यह हैं इसमें पहला सलाम मुस्तहब है इसके बाद का वाजिब (अनिवार्य): "अस्सलामो अलैका अय्योहन नबियो व रहमतुल्लाहे व बरकातो। अस्सलामो अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालेहीन। अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातहू"। (अर्थात सलाम आप पर ऐ ख़ुदा के रसूल और अल्लाह की रहमत सलाम हम पर और तमाम अल्लाह के ने बन्दों पर। सलाम तुम पर और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें।)

इस तुम से मतलब नमाज़ जमाअत (पंक्ति) के सब लोग हैं और अकेले नमाज़ पढ़ने मे अल्लाह के सब बन्दे जो इस समय दुनिया में मौजूद हैं।

यह जैसे पहले की गई इल्तिजा (प्रार्थना) के कुबूल होने की अल्लाह की ओर से ख़ुशख़बरी है जो सब को सुना दी जाती है।

तसबीहाते अरबा

अगर नमाज़ तीन रकात वाली हो जैस मग़रिब तो दूसरी रकात में तशहूद पढ़ने के बाद सलाम न पढ़े बल्कि खड़ा हो जाये और या तो सूरह हम्द अकेला पढ़ ले या तीन बार तसबीहाते अरबा पढ़े- "सुब्हान अल्लाहे वलहमदो लिल्लाहे व ला इलाहा इल्लल्लाहो वल्लाहो अकबर" अर्थात अल्लाह हर बुराई, ऐब से दूर है और सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है और कोई सच्चा ख़ुदा नहीं सिवा अल्लाह के और अल्लाह सबसे बड़ा है।

इसके बाद अल्लाहो अकबर कह कर रुकू करे, खड़ा हो और पहले की तरह दोनों सज्दे करे और अब तीसरी रकात के बाद फिर तशहूद पढ़े और इसके बाद सलाम फेरे।

अगर नमाज़ चार रकात वाली हो जैसे ज़ोहर, अस्र, इशा तो तीसरी रकात के सज्दों के बाद न तशहूद पढ़े और न सलाम बल्कि "बेहो लिल्लाहे व कूव्वतेही अक़ूमों व अक़ऊद" कह कर खड़ा हो जाये और फिर सरे हम्द या तसबीहाते अरबा पढ़े। इसके बाद रुकू और दोनों सज्दे पहले की तरह करे और इसके बाद तशहूद और सलाम पढ़कर नमाज़ समाप्त करे।